धनतेरस, दिवाली और भाई दूज के अवसर पर फ्लिपकार्ट मिनट्स के ऑर्डर 3 गुना बढ़े, त्योहारों के जश्न में डूबा भारत

फ्लिपकार्ट की क्विक कॉमर्स पेशकश, फ्लिपकार्ट मिनट्स पर धनतेरस और दिवाली से लेकर भाई दूज गिफ्टिंग तक के ऑर्डर 3 गुना बढ़े। 30 अक्टूबर से लेकर 5 नवंबर तक फेस्टिव एसेंशियल्स, होम एवं किचन, डेकोर और गिफ्टिंग की जबरदस्त मांग दर्ज हुई।

दियों की मांग सबसे अधिक 12 गुना बढ़ी, वहीं तोरण, रंगोली पाउडर, राइस लाइट्स और कॉटन विक्स भी काफी मांग में रहे। होम डेकोर ने 5 गुना बढ़ोत्तरी दर्ज की, वहीं डिनर सेट्स और फ्लोर लैंप को भी लोगों ने बहुत पसंद किया। धनतेरस के पवित्र अवसर पर सोने के सिक्कों और बार में 2 गुना वृद्धि हुई, जबकि ज्यूसर मिक्सर, एयर फ्रायर्स और इंडक्शन कुकटॉप्स में 10 गुना वृद्धि दर्ज हुई। इससे प्रदर्शित होता है कि ग्राहक दैनिक जरूरतों के अलावा अन्य वस्तुओं के लिए भी क्विक कॉमर्स अपना रहे हैं। दिवाली पूजा समीप आने के साथ चौकी, वेदी के कपड़ों, हवन सामग्री, पूजा थाली, अगरबत्तियों और धूप की मांग 4 गुना बढ़ी, वहीं डियोड्रेंट, परफ्यूम और गिफ्ट हैंपर्स ने 2 गुना से अधिक बढ़ोत्तरी दर्ज की।

फेस्टिव शॉपिंग में मिठाई और स्नैक्स भी शामिल रहे। ग्राहकों ने पारंपरिक और सेहतमंद विकल्पों, दोनों के लिए शॉपिंग की। फ्लिपकार्ट मिनट्स पर मिठाईयां 2.5 गुना बढ़ीं, जिनमें क्षेत्रीय व्यंजन, जैसे छेद्दा, ओम स्वीट्स और बलराम मुष्क्रिक शामिल हैं। सेहतमंद स्नैक्स और मिठाईयों के ऑर्डर्स में पिछले सीजन के मुकाबले 3 गुना बढ़ोत्तरी हुई, क्योंकि सेहतमंद चिप्स, नमकीन, कम शुगर वाली, शुगर-फ्री और बादाम से बनी मिठाईयों एवं आईसक्रीम की जबरदस्त मांग रही।

बेंगलुरु, दिल्ली, कोलकाता और मुंबई आदि शहरों में सबसे अधिक ऑर्डर मिले, वहीं जीरकपुर, मैसूर, भिवाड़ी और अंबाला इस अवधि में सबसे अधिक वृद्धि करने वाले टियर 2 व टियर 3 शहर थे। 1 नवंबर को सबसे अधिक ऑर्डर मिले।

लायंस क्लब बाड़मेर ने दीपावली पर निराश्रित जनों के साथ बांटी खुशियों की मिठास



बाड़मेर। दीपावली के पावन पर्व के अवसर पर सामाजिक सरोकारों की भावना को साकार करते हुए लायंस क्लब बाड़मेर द्वारा निराश्रितजनों को मिठाई वितरित कर उनके साथ खुशियां साझा की गई। क्लब के इस सेवा कार्य का उद्देश्य समाज के जरूरतमंद एवं वंचित वर्ग के चेहरों पर मुस्कान लाना तथा त्योहार की खुशियों में उन्हें भी सहभागी बनाना रहा।

इस अवसर पर लायंस क्लब अध्यक्ष एडवोकेट जयराम प्रजापत ने कहा कि दीपावली केवल रोशनी और उत्सव का पर्व नहीं, बल्कि सेवा, सहयोग और मानवता का संदेश देने का भी अवसर है। समाज के जरूरतमंद लोगों के साथ खुशियां बांटना ही त्योहार की वास्तविक सार्थकता है।

कार्यक्रम में क्लब सचिव मुकेश पारख, समाजसेवी किशन वडेरा, एडवोकेट मुकेश जैन, गोपीकिशन जी, बांकीलाल जी, मुकेश बरडिया, गौतम डूंगरवाल एवं मगराज वैष्णव उपस्थित रहे।

लायंस क्लब बाड़मेर द्वारा समय-समय पर किए जा रहे ऐसे सेवा कार्य समाज में सहयोग, संवेदनशीलता एवं मानवता की भावना को मजबूत करने का संदेश देते हैं।

पंचायत समिति भींयाड़ में सरपंच संघ अध्यक्ष पद पर श्रीमती गवरी नाथूराम सियाग निर्वाचित



बाड़मेर। (गुरू सूबेदार रावत गर्ग उण्डू राज, स्वतंत्र लेखक व साहित्यकार, पत्रकार) बाड़मेर जिले अंतर्गत शिव विधानसभा क्षेत्र की भियाड़ पंचायत समिति में सरपंच संघ के अध्यक्ष पद पर श्रीमती गवरी धर्मपत्नी नाथूराम सियाग को सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया। भियाड़ पंचायत समिति क्षेत्र की सभी ग्राम पंचायतों के सरपंचों ने एकजुटता दिखाते हुए श्रीमती गवरी नाथूराम सियाग के नाम पर सहमति जताई। भियाड़ पंचायत समिति सभागार में कल पंचायत समिति क्षेत्र के समस्त सरपंचों की बैठक आयोजित हुई। बैठक में सरपंच संघ के गठन और संगठन को मजबूत बनाने को लेकर चर्चा की गई। इसके बाद सभी सरपंचों की सहमति से श्रीमती गवरी नाथूराम सियाग को अध्यक्ष चुना गया। बैठक में भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष स्वरूप सिंह खारा, राजवेरा सरपंच स्वरूपाराम गोदारा सहित भियाड़ पंचायत समिति क्षेत्र के कई सरपंच सहित क्षेत्र के बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

एक विवेचन यह भी –

राजनीतिक दृष्टि से सामाजिक ध्रुवीकरण के निहितार्थ...



राजनीति में जाहिर तौर पर सामाजिक हित संवर्धन के निमित्त, लेकिन वास्तविक रुप से अपना वर्चस्व दर्शाने और उस वर्चस्व के आधार पर राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति की जाने लगती है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि सत्ता में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु सामाजिक ध्रुवीकरण करते हुए लाभ का सौदा कर लिया जाता है। हर एक व्यक्ति या परिवार किसी न किसी समाज का सदस्य तो होता ही है, ऐसे में उस पर कोई अकल्पित आपदा आने पर समूचा समाज उसकी पैरवी को एकजुट हो जाता है। ऐसे में सुरक्षा की दृष्टि से सामाजिक संगठन के लोग जुड़ते हैं, लेकिन आगे जाकर ठगा भी जाते हैं।

अमूमन ऐसा हर समाज में हर एक के लिए होता ही रहा करता है। इसके चलते संगठन की शक्ति का परिचय तो मिलता है, लेकिन एकल व्यक्ति या परिवार को भी एक प्रकार का संरक्षण मिला करता है। वैसे इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है, लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि गलत बात पर गलत व्यक्ति की पैरवी करने के लिए सामाजिक दबाव को माध्यम बना दिया जाता है। ऐसे में बहुमत का खेल काम करता है। यही कारण है कि जिनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं प्रबल हुआ करती है, वे सामाजिक एकता के प्रबल पैरोकार के रूप में समाज के बीच सक्रिय रहा करते हैं। इनकी निगाहें कहीं ओर होती है और ये निशाना कहीं ओर का लगाते हैं।

आजकल तो चुनावी रणनीति बनाते समय इस बात का आकलन किया जाता है कि अमुक समाज अमुक दल का समर्थक है। व्यवहार में देखा गया है कि कभी-कभी असामाजिक तत्व भी साम-दाम-दंड-भेद की नीति को अख्तियार करते हुए सामाजिक समूह को अपनी ही लकड़ी से हांका करते हैं। कहीं-कहीं तो समाज विशेष के साथ-साथ वर्ग विशेष के नाम पर राजनीतिक दलों का नामकरण भी हो जाता है और वे राजनीति में प्रभावी भूमिका का निर्वहन करने की स्थिति में आ जाते हैं। लिखना जरूरी है कि जब ऐसी स्थिति निर्मित होती है तब शेष समाजों में असंतोष की भावना अंततः कानून और व्यवस्था के लिए खतरे की घंटी बन जाती है।

सामान्य तौर पर जब तक अगले चुनाव की रणभेरी न बजने लगे, तब तक सामाजिक ध्रुवीकरण की प्रक्रिया कुछ धीमी पड़ जाती है। चुनाव आते-आते सामाजिक एकता का शंखनाद इस कदर होने लगता है कि हर एक व्यक्ति या परिवार को सामाजिक संगठन के साथ खड़ा रहने में ही अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा दिखाई देती है। शेष समय ऐसा नहीं होता कि सिवाय किसी तीज-त्योहार के, सामाजिक साथियों का किसी एक घट पर मिलन हो सके। हां, शादी ब्याह या अन्य काज क्रियावर के समय समाज जन का जमघट हो सकता है लेकिन उसका अंतर्निहित भाव राजनीतिक कतई नहीं होता।

खैर, मुद्दे की बात यह कि विभिन्न वर्ग-संप्रदाय की सामाजिक एकता का ताना-बाना किसी भी कारण से बुना गया हो, संगठन की शक्ति का लाभ देता ही है। इस संदर्भ में एक बात तो तय है कि जिस प्रकार व्यक्ति, व्यक्ति से समाज और समाज से राष्ट्र का स्वरूप निखरता है - वैसे ही समाज को समाज से जोड़कर राष्ट्र को महाशक्ति का जामा पहनाया जा सकता है। यह प्रसन्नता का विषय है कि कुछ एक समाज सच्चे अर्थों में सामाजिक विकास की परिकल्पना को सार्थक कर रहे हैं। राजनीति में प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया करते। जाहिर है कि ऐसे समाजों में संपन्नता के साथ-सथ शालीनता भी कूट-कूट कर भरी दिखाई देती है।

ऐसे समाज कम ही है। बावजूद इसके हमें यह अपेक्षा करनी चाहिए कि विभिन्न समाजों के संत,ऋषि-महर्षि अपने प्रभाव का उपयोग करते हुए गैर राजनीतिक दृष्टि के आधार पर खड़े किए गए सामाजिक संगठन को अपना आशीर्वाद दें। ताकि गैर राजनीतिक सामाजिक संगठन की परिकल्पना को नया आयाम देते हुए देश-प्रदेश के विकास को गति दी जा सके। वैसे वर्तमान दौर में ऐसी कल्पना का कोई औचित्य नजर नहीं आता होगा। लेकिन यह जरूरी है। अन्यथा राजनीतिक आग्रह के साथ खड़े किए गए , चल रहे या बनाए जाने वाले सामाजिक संगठन राजनीति के भंवर जाल में उलझ कर समाज को गर्त में डुबो देंगे।

दरअसल अब समय आ गया है कि विशुद्ध रूप से सामाजिक विकास के प्रति प्रतिबद्ध सामाजिक संगठनों को क्रियाशील किया जाना चाहिए। वैसे यह सब दुष्कर तो है, लेकिन असंभव कतई नहीं। इसलिए इस दिशा में गंभीरतापूर्वक प्रयास किए जाने की नितांत आवश्यकता है। अन्यथा तमाम सामाजिक संगठन अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए समाज के हित का संवर्धन कदापि नहीं कर सकेंगे। इसलिए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि विभिन्न धर्मगुरु अपने-अपने समाज के संगठनों को गैर राजनीतिक आधार पर सामाजिक विकास के प्रति प्रेरित करें।

अन्यथा समाज के तथाकथित हित चिंतक ठेकेदार अपनी राजनीतिक स्वार्थसिद्धि की प्रबलता के चलते समाज के हित को दांव पर लगाते रहेंगे। कुल मिलाकर वर्तमान दौर में यह आवश्यक प्रतीत होता है कि देश-प्रदेश में गैर राजनीतिक रुझान रखने वाले सामाजिक संगठनों को प्रश्रय दिया जाना चाहिए। ऐसा होने पर ही सच्चे अर्थों में समाज के साथ-साथ देश-प्रदेश भी तीव्र गति से प्रगति पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

-राजेंद्र बज

दीवाली के मौसम में छत्तीसगढ़ में सुआ गीतों की रौनक

तरी हरि नाना ,
मोर नाहना रे सुआना,
तरी हरि नाना ओ....
आमा के डार बोले मैना,
तोर बंसी मिठ लागे कन्हैया,
बोलत हे सुग्घर परेवना.

दीवाली के इस मौसम में छत्तीसगढ़ के गाँवों और शहरों में, विशेष रूप से मैदानी इलाकों में इन दिनों पारम्परिक सुआ गीतों के साथ सुआ नृत्य की भी धूम मची हुई है. सड़कों और गलियों में सुआ गीतों की सामूहिक अनुगूँज है.हर घर - आंगन में सुआ नृत्य की रौनक है. आंगन गाँव की बेटियों के मीठे सामूहिक स्वरों से गुलज़ार हैं.रंग - बिरंगे कपड़ों में सज -धज कर बेटियाँ समूह में घर -घर जाकर गोल घेरा बनाकर, ताली बजाते हुए छत्तीसगढ़ी सुआ गीत गाती हैं और नृत्य करती हैं.बाँस की एक टोकनी में थोड़े धान या चावल के साथ बीच में प्रतीक स्वरूप मिट्टी से निर्मित सुआ (तोता या मिट्ठू)को रखा जाता है.जिस घर से चावल और थोड़ा रुपया या पैसा, जो भी मिल जाए, टोकनी में हँसी - खुशी से लेकर घर के लोगों को शुभकामनाएँ देते हुए बेटियाँ आगे बढ़ जाती हैं. इनमें से कई बेटियाँ स्कूलों में पढ़ाई भी करती हैं, लेकिन अभी दीवाली की छुट्टियां चल रही हैं, इसलिए इसलिए उत्साह के साथ इस नृत्य में शामिल हो रही हैं.सुआ नृत्य का सिलसिला दीवाली से कुछ दिन पहले शुरू हो जाता है और देवउठनी एकादशी तक चलता है.





कृषि संस्कृति पर आधारित छत्तीसगढ़ में धान कटाई के मौसम में महिलाओं के इस लोकनृत्य की रंगत देखते ही बनती है.पारम्परिक सुआ गीतों में आम तौर पर भगवान शिव, माता पार्वती और देवी लक्ष्मी की पूजा की भावना होती है. सुआ या तोते को प्रतीकात्मक रूप से माध्यम बनाकर बेटियाँ अपना संदेश अपने मायके तक पहुँचाती हैं. कुछ लोगों के अनुसार इनमें से कुछ लोककथाओं में विरह की भावना भी होती है. कुछ सुआ गीतों में शिव - पार्वती (गौरा -गौरी)के विवाह का भी प्रसंग आता है.

बेटियों की ऐसी ही एक सुआ नृत्य मंडली आज 7 नवम्बर को दोपहर हमारे गाँव के मोहल्लों में भी लोगों के घरों में जाकर नृत्य कर रही थीं. जिस घर में भी वे जाती , वहाँ के आंगन की रौनक देखते ही बनती थी. ये बेटियाँ मेरे पड़ोस के गाँव सरकड़ा की हैं.वे मेरे घर भी आईं. मैंने सपरिवार उनका स्वागत किया.उन्होंने उत्साहपूर्वक नृत्य किया और सहर्ष फोटो भी खिंचवाया . उनके साथ मृदंग पर संगत कर रहे युवक खिलेश्वर भी सरकड़ा के हैं, लेकिन वे कर्नाटक के एक पोल्ट्री फार्म में मुर्गे -मुर्गियों की बीमारियों से बचाव के लिए टीका लगाने का काम करते हैं. खिलेश्वर ने बताया कि अपने गाँव सरकड़ा की इस सुआ नृत्य मंडली में मृदंग वादन के लिए कर्नाटक से खास तौर पर यहाँ आए हैं.हालांकि तोते को प्रतीक बनाकर गाया जाने वाला सुआ गीत छत्तीसगढ़ी भाषा का पारम्परिक लोकगीत है, जो बेटियों द्वारा गाया जाता है.खिलेश्वर का कहना है कि सुआ नृत्य के साथ मृदंग और कुछ अन्य साधारण वाद्य यंत्रों के वादन की यह परम्परा सिर्फ़ महासमुंद जिले में है. सुआ गा रही बेटियाँ स्वयं इन गीतों की रचना कर लेती हैं. आज वे गा रही थीं -

तरी हरि नाना, मोर नाहना रे सुआना,
तरी हरि नाना ओ....

समूह स्वरों में इन शब्दों के साथ सुआ गीत की शुरुआत होती है. इस गीत की ये प्रारंभिक पंक्ति है, जो स्थायी रूप से प्रचलित है,जिसमें आगे के अंतरा की पंक्तियाँ नृत्य मंडली में शामिल बेटियाँ अलग - अलग प्रसंगों के साथ अपनी तरफ से जोड़ती जाती हैं.जैसे ग्राम सरकड़ा की बेटियों ने आज इसमें यह अंतरा बनाकर गा रही थीं -

आमा के डार बोले मैना,
तोर बंसी मिठ लागे कन्हैया,
बोलत हे सुग्घर परेवना

अर्थात् - आम की डाली में मैना बोल रही है कि हे कन्हैया, तेरी बंसी की आवाज़ बहुत मीठी लग रही है. एक सुन्दर कबूतर ऐसा बोल रहा है.

इस नृत्य मंडली में शामिल बेटियों में चन्द्रमा ठाकुर और कामिनी ठाकुर 12वीं कक्षा की और जान्हवी सिंह 7वीं की छात्रा हैं. कुछ बेटियों ने पढ़ाई छोड़ दी है. सुआ मंडली में एक बुज़ुर्ग पुरुष और दो बुज़ुर्ग महिलाएं भी साथ चल रही थीं, बुज़ुर्ग महिला टोकनी में घरों से मिले चावल और रूपए पैसों को संभाल रही थीं. उनकी टोकनी में सुआ (मिट्ठू)नहीं थे. उनका कहना था कि शाम को सुआ सजाकर अन्य घरों में जाएँगी. आज गाँव के नज़दीक पिथौरा कस्बे में बेटियों की कई सुआ नृत्य मंडलियाँ दुकानों में जाकर समूह स्वरों में नृत्य कर रही थीं. गलियाँ और सड़कें उनके सुआ गीतों से गूँज रही थीं.वे आसपास के गाँवों से आई थीं.



-स्वराज्य करुण,
पिथौरा जिला -महासमुंद
(छत्तीसगढ़)

अहमदाबाद की दिवाली



मेरी जिंदगी में आए हो तुम
बन कर दीपोत्सव का उजास
मेरे मन में सदा तुम रहना
बन कर प्रकाश ... !!
दिवाली की यादें वो सारी बातें
कैसे लिखूं
वो प्यारी प्यारी खूबसूरत एहसासे
पहले साधन कम थी और साधना अधिक
सुकून और शांति तो दोगुनी चौगुनी हुआ करती थी।
अब साधन अधिक है और साधना तनिक तथा
सुख शांति और खुशियां तो क्षणिक हो कर रह गई है।।
आपको याद है वो दिवाली उस वक्त ना चिंता थी ना कोई फ़िक्र थी
बस प्रेम अपनापन और खुशियां थी।? आपको पाकर तो मेरे कदम जमीं पर पड़ते ही नहीं थे।? हां ये अलग बात था कि मैं आज की तरह उस वक्त अपनी भावनाओं का व्याख्यान नहीं कर पाती थी मगर सच तो ये है कि मैं स्वयं को दुनिया की सबसे भाग्यशाली स्त्री समझती थी ।
आपका प्रेम स्नेह और साथ पाकर मेरा मन भीतर से आनंदित हो गया था । ऐसा लगता था जैसे मैं सर्वश्रेष्ठ चोटी पर हूं मगर कभी आप से कह नहीं पाई ।? मुझे ऐसा लगता था आप मेरे कहे बिना ही ये सब जान लेते हो।
आपको पता है आपके साथ मैं उस तरह से जी पाती हूं
जैसे मुझे जीना होता है मैं बिल्कुल बच्ची बन जाती हूं और आप मेरी सारी नादानियां सारा बचपना संभाल लेते हो । मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी ताकत सबसे बड़ी कमाई सबसे बड़ी पूंजी और इन सबसे बढ़ कर मेरा आत्मविश्वास आप हो हर सुख हर मुस्कान मेरी आप हो मेरे जीने की उम्मीद मेरी दुनिया मेरी सम्पूर्ण सृष्टि आप हो ।
मैंने कभी सोचा नहीं था मुझे आप से इस कदर प्यार होगा मगर आज हालात ये हैं कि आपके बगैर सपने में भी मैं जीवन की कल्पना नहीं कर सकती। परेशान होती हूं आपके लिए तो गुस्सा भी आप से ही होती हूं ।
बहुत प्यार करती हूं आप से शायद इतना कि मेरे लिए उसे शब्द देना मुमकिन नहीं । मुझे महसूस करो आप मेरी रक्त की धाराओं में बहते हो मेरी हर सांस में सिर्फ आप हो ।मेरे मन मंदिर में आप हो मैं जिसे पूजती हूं चाहती हूं मानती हूं मांगती हूं वो आप हो ? । जिंदगी की हर खुशी आप हो । मेरा ये रुप रंग और नवजीवन सब आप का ही दिया हुआ है । जब भी मैं कहीं बाहर जाती हूं ,लोगों से मिलती हूं तो लोग मुझ से पुछते है कि मैं कौन सी कम्पनी में काम करती हूं तो मन ही मन मैं सोचने लगती हूं क्या खूब पर्सनालिटी मेरा बनाया आप ने और जब उन्हें ये बताती हूं कि मैं अब जाब नही करती बल्कि एक होम मेकर हूं तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता है और उनके माथे की शिकन को देख कर मुझे आपकी रचनात्मकता पे गर्व होता है ।।
मैं वैसी नहीं जैसी आपको पसंद है मगर मैं जैसी भी बस आप ही की हूं ।।
आप मेरी जिंदगी में उजास बन कर आए हो? इसलिए आज से मैं आपको उजास कह कर बुलाउंगी ।।
आपको याद है उन दिनों आपकी पोस्टिंग अहमदाबाद में थी वहां कितना बड़ा घर था हमारा और हम दोनों ने मिल कर उस घर को कितने प्यार से सजाया था । दीए की रौशनी में जगमगाता वो घर आज भी मेरे आंखों के आगे वैसे का वैसा ही आ जाता है । उस दिन हमलोगों ने खाने के लिए कितना कुछ बनाया था और सबसे अच्छी तो फिरनी बनी थी । मैंने फिरनी पहली बार ही बनाया था पर वो बहुत अच्छा बना था । आप ने भी तो खूब खाया था । जब हमलोग लक्ष्मी पूजन के बाद खाने के लिए बैठे थे तो इतने सारे व्यंजन पकवान देख कर हमारी तो हंसी छूट गई थी । खाने? वाले हम दो और खाना इतना सारा? ..!! हम खाए जा रहे थे खाएं जा रहे थे और खाना खत्म ही नहीं हो रहा है ।?उस रात हम कितना हंसे थे मुझे तो याद भी नहीं कि उससे पहले मैं कभी इतना खुल कर हंसी भी थी ।
धनवंतरी जी का सर पे हाथ रहे,
लक्ष्मी जी सदा घर में वास करें
मन का हर खाली कोना खुशियों से भरे
अब की दीवाली कुछ ऐसे मने
भूले बिसरे सभी एक साथ मिले
आओ प्रेम का कुछ ऐसा हम आगाज करें
दूर हो अंधेरा मन का
प्रेम का उजास हम भरे
हर घर दीप जलें
मन का विकार हटे
जीवन धन धान्य खुशियों से सजे
मां लक्ष्मी के आशीर्वाद से जीवन में
सुख शांति समृद्धि आयु आरोग्य सब मिले ।।
आप सभी को दीपावली की बहुत बहुत बहुत शुभाकामनाएं ।।

किरण काजल बेंगलुरु

आत्म चिंतन : छोटी सी जिंदगी, आपसी हेत प्रेम से जीएं

सम्पत्ति से केवल सुविधायें मिलती हैं सुख नहीं, सुख मिलता है आपस के प्यार से और अपनों के साथ से... यदि केवल सुविधाओं से सुःख मिलता तो धनवान लोगों को कभी दुःख न होता, यदि किसी परिस्थिति के लिए आपके पास सही शब्द नहीं है तो केवल मंदहास कर दीजिये, शब्द ज़ल्ज़ा सकते है पर मंदहास सदा काम कर जाती है...यदि हम किसी को नमस्कार यह सोचकर कर रहे हो कि वो भी हमको करेगा तो वो नमस्कार व्यर्थ है, क्योंकि नमस्कार संस्कार के कारण से किया जाता है अहंकार के कारण से नहीं। आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो ऐसी ईश्वर से कामनाएं।



जय जगदुरु भगवान महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि।
गुरू सूबेदार रावत गर्ग उण्डू राज श्री हरि विष्णु कृपा,
श्री गर्गवास राजवेरा, राजस्थान।

